Vol. 4, Issue-2 (July 20015) pp. 30-32 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वाद्यों के नवीन वर्गीकरण की आवश्यकता

रूचि रानी गुप्ता
शोध छात्रा,
संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद
Email: guptaruchirani@gmail.com

प्राचीनकाल से ही विद्वानों द्वारा वाद्यों को वर्गीकृत करने का प्रयास किया जाता रहा है। समय–समय पर विभिन्न विचारकों द्वारा अपनी दृष्टि से विभिन्न वर्गीकरण भी प्रस्तुत किये जाते रहे हैं।

किन्तु कई वाद्य ऐसे भी निर्मित हो चुके हैं जिनका चार वर्गों के मूल सिद्धान्तों से सामंजस्य नहीं बैठता। फिर भी हम किसी न किसी लक्षण के आधार पर इन्हीं चार वाद्यों को वर्गीकृत करना चाहें, तो हमें अवश्य ही समस्या होगी। यद्यपि भारतीय संगीत के इतिहास में नए वाद्यों के उपयुक्त नए वर्गीकरण के लिए भी प्रयास किये गये, किन्तु उन्हें अधिक महत्ता नहीं प्रदान की गयी।[1] वाद्यों की संख्या में पूर्व समय से प्रचुर मात्रा में वृद्धि हुई है। विभिन्न वाद्यों की वादन विधि में भी परिवर्तन हुए हैं। चूँकि, विषय शास्त्रीय वाद्यों पर आधारित है, इसलिए मेरा प्रयास उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत वाद्यों को वर्गीकृत करने का रहेगा।[2]

उत्तर भारतीय संगीत का इतिहास देखने से ज्ञात होता है कि उपंग जैसा वाद्य हमारे यहाँ बहुत पहले से मौजूद है। इसमें चमड़ा भी प्रयुक्त होता है और तार भी, यह ताल वाद्य है। इसी प्रकार प्रायः गज से बजने वाले वाद्यों सारंगी, रावण हत्था, इसराज आदि ऐसे वाद्य हैं जो 'तन्त्री वाद्य' हैं, किन्तु उनमें चमड़ा भी प्रयुक्त होता है। ये स्वर–वाद्य है। इन स्वर वाद्यों में यद्यपि चमड़े का प्रयोग होता है किन्तु उनकी प्रकृति में इससे कोई विशेष अन्तर नहीं आता है और ये तंत्री वाद्य ही बने रहते हैं। उपंग में ध्वनि उत्पादन चमड़े से नहीं अपितु तंत्री से किया जाता है और वह तंत्री यहाँ स्वर की अपेक्षा लय और ताल को व्यक्त करती है। अवनद्ध वाद्य के लिए यह बिल्कुल नयी दिशा है। इस प्रकार के वाद्य का उल्लेख महाकवि बाण के हर्षचरित में मिलता है। जिसे वहाँ तन्ति पटहिका कहा गया है। प्राचीन युग में ढोल, ढोलक आदि को पटह कहा जाता था। अतएव यहाँ खटहिका कहा गया है। प्राचीन युग में ढोल, ढोलक आदि को पटह कहा जाता था। अतएव यहाँ पटहिका से छोटी ढोलकी का भाव लिया जाता था। इस छोटी ढोलकी में तार अथवा ताँत (चमड़े के तार) लगे होने के कारण ही इसे तन्ति पटहिका कहा जाता था।[3]

इन वाद्यों के अतिरिक्त हम कुछ वाद्य और भी पाते हैं, जिनमें किसी वस्तु के आघात द्वारा स्वरोत्पत्ति की जाती है। हमारे देश में मध्ययुग के आस–पास एक नवीन वाद्य जल–तरंग का विकास हुआ। संगीत पारिजात में इसे घन के अन्तर्गत माना गया है। जल–तरंग का प्रयोग अन्य स्वर वाद्यों के अनुरूप राग के अन्तर्गत अथवा गीत के वादन के लिए होता है अतएव धन वाद्यों में इसे रखना उसकी प्रकृति के अनुकूल नहीं है। जल–तरंग के प्याले सामान्यतः चीनी मिट्टी के होते हैं, इसलिए उसे प्यालों की घनता के कारण घन वाद्यो में रखना अथवा डण्डी के प्रहार से वादन करने के कारण उसे घन वाद्य मानना विशेष तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता है। कुछ समय पश्चात् अन्य संगीतोपयोगी ध्वनि उत्पन्न करने वाली वस्तुओं को उचित स्वरांतरालों पर स्थिर उनका भी जलतरंग की भाँति प्रयोग किया जाने लगा। इस प्रकार के वाद्यों में काष्ठ–तरंग, मुकुर–तरंग, घुंघरू–तरंग, घण्टा–तरंग, तबला–तरंग, आदि आते हैं। ऐसे सभी वाद्य–तरंग के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं।

डॉ0 लालमणि मिश्र ने अपने पुस्तक भारतीय गीत 'वाद्य' में 'वाद्यों का वर्गीकरण' पृष्ठ संख्या 16 में लिखा है– इस प्रकार के वाद्यों की एक अलग श्रेणी बनानी चाहिए, जिसे तरंग वाद्य के अन्तर्गत वर्गीकृत करना चाहिए।

उपर्युक्त प्रकार के वाद्यों के अतिरिक्त कुछ इलेक्ट्रानिक वाद्य भी प्रचार में आ चुके हैं। इस प्रकार के वाद्यों का प्रयोग उपशास्त्रीय संगीत, फिल्म संगीत या पार्श्व संगीत के लिए उपयुक्त माना जाता है इस प्रकार के वाद्यों में सिन्थेसाइजर, इलेक्ट्रानिक तबला, इलेक्ट्रानिक तानपुरा, ऑक्टापैड, पियानो, इलेक्ट्रानिक लहरा जैसे वाद्य भी प्रचलित हो गये हैं। इलेक्ट्रानिक तानपुरा जिसे एक स्थान से दूसरे तक ले जाना सुगम है, जिसमें जवारी आदि की भी किसी प्रकार की असुविधा नहीं है। अतः इस प्रकार मेरा मानना है कि वाद्यों के विकास की सम्भावनाओं को देखते हुए एक नवीन वर्ग बनाना उचित होगा जिसे इलेक्ट्रानिक वाद्यों के रूप में वर्गीकृत किया जा सके।

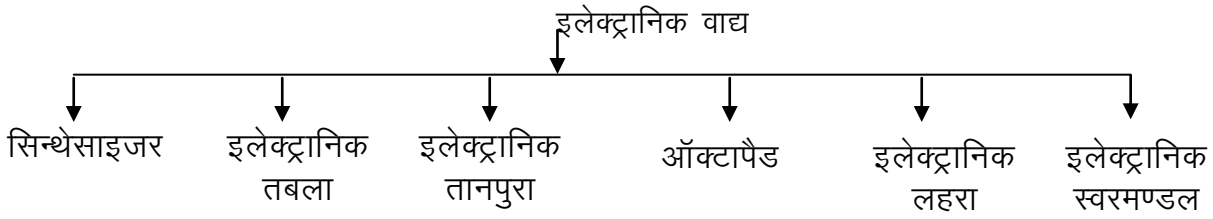

इस प्रकार के अनेक वाद्य फिल्म संगीत में प्रयोग किये जाते हैं। वादन विधि के आधार पर इनका वर्गीकरण किया जा सकता है। आज के युग में वाद्यों की संख्या इतनी अधिक हो गयी है और इतने भिन्न–भिन्न प्रकार के वाद्य यंत्र प्रचार में हैं, जिनको देखते हुए वाद्यों का वर्गीकरण इस प्रकार से होना

चाहिए, जिससे अधिक से अधिक वाद्य किसी न किसी वर्ग में समाहित हो सकें। वाद्यों के विकास को देखते हुए निश्चय ही यह कहा जा सकता है कि वाद्यों की संख्या में समय के अनुसार भविष्य में वृद्धि अवश्य होगी। अतः पुनः एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वाद्यों को वर्गीकृत करना आवश्यक है।

वाद्यों के वर्गीकरण का इतिहास लगभग 200 वर्षों का रहा है वाद्यों के वर्गीकरण के विषय में लिखा गया प्रथम ग्रन्थ भरतमुनि नाट्यशास्त्र है। भरतमुनि प्रदत्त वाद्य–वर्गीकरण ही सर्वाधिक प्राचीन सर्वश्रेष्ठ एवं वैज्ञानिक है।

महर्षि भरत द्वारा रचित ग्रन्थ नाट्यशास्त्र को ही आधार ग्रन्थ मानते हुए संगीत शास्त्र के अन्य परवर्ती आचार्यों ने वाद्यों के वर्गीकरण के विषय में अपने–अपने विभिन्न मत दिये हैं। विभिन्न आचार्यों के भिन्न–भिन्न मतों का विस्तारपूर्वक विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि जिन विद्वानों ने कण्ठ–संगीत को वाद्य में सम्मिलित किया वे पाँच वाद्यों की ध्वनियाँ मानते हैं तथा जिन्होंने नहीं किया वे वाद्यों के चार भेद ही मानते हैं। कुछ विद्वान, जैसे नारदमुनि ने अपने वाद्य वर्गीकरण में वाद्यों के तीन ही वर्ग बताए हैं इस प्रकार उत्तर भारतीय वाद्यो के वर्गीकरण में विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने भिन्न–भिन्न मत प्रस्तुंत किये हैं।

यद्यपि आचार्य भरत मुनि का वाद्य वर्गीकरण अपने में परिपूर्ण है किन्तु यदि हम उसमें सूक्ष्म परिवर्तन कर कुछ विषयों को उसमें जोड़ दें तो ये वर्गीकरण आधुनिक युग तक के सभी वाद्यों को अपने में समेटने में और अधिक सक्षम हो जाएगा। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के वाद्यों का वर्गीकरण उनके गुणधर्म एवं आवश्यकतानुसार सुचारू रूप से किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र, लालमणि/भारतीय संगीत वाद्य/भारतीय विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली/प्रथम संस्करण/पृष्ठ संख्या– 15
2. भार्गव, अर्चना/भारतीय संगीत शास्त्र में वाद्यों का चिन्तन/पृष्ठ संख्या– 64
3. प्रो0 पी0 शाम्बमूर्ति/श्रुतिवाद्याज़ अपेन्डिक्स/प्रथम संस्करण/पृष्ठ संख्या–29–31
4. शर्मा, भगवतचरण/ताल प्रकाश/संगीत कार्यालय,हाथरस/13वाँ संस्करण अक्टूबर 2013
5. मराठे, मनोहर भालचन्द्र राव/ताल वाद्य शास्त्र(एक विवेचन)/शर्मा पुस्तक सदन,ग्वालियर/द्वितीय संस्करण
6. मिश्र, विजय शंकर/तबला पुराण/कनिष्क पब्लिशर्स,नई दिल्ली/प्रथम संस्करण 2005
7. बसन्त/संगीत विशारद/संगीत कार्यालय,हाथरस/26वाँ संस्करण 2007
8. गोडबोले, मधुकर गणेश/तबला शास्त्र/अशोक प्रकाशन मंदिर,इलाहाबाद/प्रथम संस्करण
9. संगीत पत्रिका(तबला अंक)/संगीत कार्यालय हाथरस द्वारा प्रकाशित